विदर्भ स्वाभिमान

www.vidarbhswabhiman.com

संपादक - सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे

9423426199/8855019189

❖अमरावती,गुरूवार 13 से 19 अगस्त 2026 ❖वर्ष :17 ❖अंक- 10 ❖ पृष्ठ 8 ❖ मूल्य-4/-पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2025-2027❖डाक : शुक्रवार-शनिवार MAHHIN/2010/ 43881

बाबूजी के आदर्श विचार

जीवन की खुशियां

जीवन में स्वतंत्रता सभी को चाहिए लेकिन दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यपरायणता सभी भूल जाते हैं. अगर दोनों में बेहतरीन संतुलन हो तो व्यक्ति कुछ भी कर सकता है. आजादी के ८० साल में भी अगर यातायात नियम सिखाना पड़ रहा है, नियमों की धज्जियां पढ़े-लिखे उड़ा रहे हैं तो निश्चित ही यह चिंता के साथ ही गंभीर सामाजिक चिंतन का विषय है. इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए.

600 करोड़ से अधिक का चूना लगाया देश को

नई दिल्ली- देश की सुरक्षा से जुड़े हथियारों के प्रोडक्शन को लेकर चिंताजनक खबर सामने आई है. संसद की एक स्थायी समिति ने भारत के छोटे हथियारों बनाने वाले कारखानों की बदहाली पर कड़ा रुख अपनाया है. स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि पिछले कुछ सालों में इन कारखानों को 600 करोड़ रुपये से ज्यादा का भारी नुकसान उठाना पड़ा है. उत्पादन क्षमता का बड़ा हिस्सा बिना किसी काम के खाली बैठा है.यह रिपोर्ट निश्चित ही चौकाने वाली है.

यह रिपोर्ट एडवांस्ड वेपन्स एंड इक्विपमेंट इंडिया लिमिटेड को लेकर आई है, जो रक्षा मंत्रालय के तहत आने वाली एक सरकारी कंपनी (क़ब्ज़ा) है. यह देश में छोटे हथियारों के कारखानों का संचालन करती है. आइए जानते हैं कि इस रिपोर्ट में क्या-क्या बड़े खुलासे हुए हैं.

उपलब्धियों के साथ जिम्मेदारी भी है जरूरी

संकल्प तथा राष्ट्र सेवा में स्वयं को झोंकने का पर्व है आजादी की सालगिरह

देश की आजादी की सालगिरह के साथ हर भारतीय के लिए जहां तरक्की की उपलब्धियां हैं, वही अधिकार के साथ अपने कर्तव्यों का भी हर नागरिक को जहां भांग रहता है वह राष्ट्र सदा प्रगति करता है. आजादी के बाद भारत ने हर क्षेत्र में शानदार कामयाबी हासिल की है इसमें कोई दो मत नहीं है. पर इसके साथ आज भी किसने की आत्महत्या, पेपर लीक जैसे मामले, बढ़ती महंगाई और इसमें झुलसता गरीब वह मध्यम वर्ग सहित गलत नीतियों के कारण होने वाली परेशानी पर चिंतन करने की जरूरत है. आजादी केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, अधिकार और स्वाभिमान की

पुनर्स्थापना थी. 15 अगस्त 1947 को देश ने ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की और अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करने का अवसर पाया. स्वतंत्रता के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है.

सबसे बड़ी उपलब्धि भारत का लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में मजबूत होना है. संविधान ने प्रत्येक नागरिक को समानता, स्वतंत्रता और न्याय का अधिकार दिया. नियमित चुनावों और लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से देश ने सत्ता के शांतिपूर्ण हस्तांतरण की परंपरा कायम की.शिक्षा के क्षेत्र में भी देश ने लंबी यात्रा तय की है. विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयो और तकनीकी संस्थानों का विस्तार हुआ. विज्ञान एवं तकनीक में भारत ने अंतरिक्ष अनुसंधान, डिजिटल तकनीक, चिकित्सा और संचार के क्षेत्र में विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई है.कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति ने भारत को **शेष पेज 7 पर**

शुभेच्छुक- आनंद परिवार, विदर्भ स्वाभिमान परिवार,अमरावती

विदर्भ स्वाभिमान

संपादकीय

आदिवासियों की दुर्गति कब रूकेगी,यंत्रणा बेकार

सरकार द्वारा आदिवासियों के कल्याण के लिए तमाम योजनाएं चलायी जाती हैं. लेकिन दुर्भाग्य यंत्रणा में भ्रष्टाचार, संवेदनशीलता का अभाव उन्हें इससे वंचित करता है. कभी बीमारी, कभी भुखमरी, कभी प्रशासन की लापरवाही के कारण आदिवासियों म की मौत होती है. सरकार द्वारा आदिवासी बहुल मेलघाट के विकास तथा स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूती प्रदान करने के लिए करोड़ों रूपए खर्च करने के बाद भी केवल संवेदनहीनता तथा काम में समर्पण के अभाव के कारण कई लोगों की जिंदगी अक्सर जाकर स्वास्थ्य विभाग निशाने पर होता है. जिंदगी और मौत डाक्टर के हाथ में भी नहीं रहती है, यह तय है लेकिन कई बार लापरवाही खलने लायक निश्चित होती है. सरकारी अस्पतालों में आमतौर पर मौत के बढ़ते आंकड़े और लापरवाही परिजनों को स्पष्ट दिखाई देने के बाद भी इसकी दखल नहीं लिया जाना निश्चित ही चिंता की बात है.स्वास्थ्य सेवा का मूल उद्देश्य जीवन बचाना है, लेकिन जब इसी व्यवस्था में लापरवाही के आरोप सामने आते हैं तो सवाल केवल एक घटना तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पूरी व्यवस्था की कार्यप्रणाली पर उठते हैं. मेलघाट जैसे आदिवासी और दुर्गम क्षेत्र में स्वास्थ्य सविधाओं की कमी लंबे समय से चिंता का विषय रही है. ऐसे में यदि अस्पताल स्तर पर भी गंभीर लापरवाही के आरोप लगते हैं तो यह और भी चिंताजनक स्थिति है.धारणी उपजिला अस्पताल में चिचघाट निवासी चार वर्षीय आदिवासी बच्ची युवानी जावरकर की मौत ने एक बार फिर स्वास्थ्य विभाग को कठघरे में खड़ा कर दिया है. परिजनों का आरोप है कि ड्यूटी पर तैनात चिकित्सक समय पर अस्पताल नहीं पहुंचे और फोन पर ही उपचार संबंधी निर्देश देते रहे. उनका कहना है कि यदि समय पर चिकित्सकीय सविधा मिलती तो बच्ची की जान बच सकती थी. हालांकि, पूरे मामले की सच्चाई जांच के बाद ही सामने आएगी, लेकिन इस घटना ने स्वास्थ्य व्यवस्था की संवेदनशीलता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं.

मेलघाट में कुपोषण, मातृ एवं शिशु मृत्यु जैसे मुद्दों पर सरकार द्वारा लगातार प्रयास किए जा रहे हैं. करोड़ों रूपये खर्च कर स्वास्थ्य सविधाओं को मजबूत करने का दावा किया जाता है, लेकिन जमीनी स्तर पर यदि मरीजों को समय पर डॉक्टर उपलब्ध नहीं होते तो इन प्रयासों पर सवाल उठना स्वाभाविक है.दुर्गम क्षेत्रों के अस्पतालों में डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मचारियों की उपस्थिति, आपातकालीन सेवाओं की तत्परता और जवाबदेही सनिश्चित करना प्रशासन की प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिए. किसी भी मरीज के लिए हर मिनट महत्वपूर्ण होता है, विशेषकर तब जब वह गंभीर स्थिति में अस्पताल पहुंचता है.इस मामले में जांच के आदेश दिए गए हैं. अब आवश्यकता है कि जांच केवल औपचारिकता बनकर न रह जाए, बल्कि तथ्यों के आधार पर जिम्मेदारी तय हो. यदि लापरवाही साबित होती है तो दोषियों पर कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके.मेलघाट के नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सविधा मिलना उनका अधिकार है. स्वास्थ्य व्यवस्था में विश्वास तभी कायम रहेगा, जब डॉक्टरों और प्रशासन की जवाबदेही स्पष्ट होगी. एक मासूम की मौत केवल एक परिवार का दर्द नहीं है, बल्कि यह पूरी व्यवस्था के लिए चेतावनी है कि लापरवाही की कोई जगह नहीं होनी चाहिए. मानवता का भाव ही इससे बचा सकता है.

हम हैं असंभव को संभव करने वाले

विदर्भ स्वाभिमान
www.vidrabhswabhiman.com 9423426199

भारत महान देश है, इसमें किसी को संदेह नहीं होना चाहिए. लेकिन जिस तरह से देश में तरक्की हो रही है उससे यह तय है कि 140 करोड़ जनता अगर ठान ले तो दुनिया में नेतृत्व करने की क्षमता केवल भारतीयों में ही है. देश में स्वतंत्रता दिवस उत्साह से मनाया जाता है. यह राष्ट्रीय पर्व है लेकिन इसके साथ ही स्वतंत्रता के साथ ही सभी देशवासियों में जिम्मेदारी का भी भान होना चाहिए. राष्ट्र धर्म पहले और बाकी सब बाद में वाली सोच जब विकसित होगी तो निश्चित ही 140 की आबादी वाला हमारा राष्ट्र विश्व में सर्वश्रेष्ठ बनने से कोई नहीं रोक सकता है. अमरावती के सैकड़ों स्वाधीनता सेनानियों ने भी आजादी के संघर्ष में न केवल सहभाग लिया, बल्कि पूरी ताकत से अंग्रेजी हकूमत का विरोध किया. 15 अगस्त केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं, बल्कि उन अनगिनत बलिदानों को याद करने का दिन है, जिनकी बदौलत भारत ने गुलामी की बेड़ियां तोड़ीं। राष्ट्रीय पर्व का उत्साह मनाने के साथ ही युवाओं को जिम्मेदारी का भी परिचय देना चाहिए. शहर में पिछले कुछ वर्षों से उड़ान पुल अथवा व्यस्ततम सड़कों पर जिस तरह से युवा धूम गाड़ी चलाते हैं और हार्न से बाँकी को डराते हैं, इस तरह की स्थिति नहीं होनी चाहिए.

स्वतंत्रता दिवस का उत्सव हमें गर्व से भरता है, लेकिन साथ ही यह आत्ममंथन का अवसर भी देता है कि जिस आजादी के लिए हमारे पूर्वजों ने अपना सर्वस्व न्योछावर किया, उसकी गरिमा को हम कितना बनाए रख पा रहे हैं।आज भारत दुनिया के बड़े और प्रभावशाली लोकतंत्रों में अपनी पहचान बना चुका है। विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है। गांवों से लेकर महानगरों तक विकास की तस्वीर बदली है। लेकिन विकास की इस यात्रा के बीच गरीबी, बेरोजगारी, असमानता, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी चनौतियां अब भी हमारे सामने हैं। स्वतंत्रता का वास्तविक अर्थ तभी सार्थक होगा, जब विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे।आजादी केवल अधिकारों का नाम नहीं, बल्कि कर्तव्यों की भी याद दिलाती है। लोकतंत्र में असहमति का सम्मान, संविधान के प्रति आस्था, कानून का पालन और सामाजिक समरसता बनाए रखना प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के नाम पर बढ़ती दूरियां राष्ट्र की एकता को कमजोर करती हैं। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र का हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन मनभेद समाज को बांटने लगें तो यह चिंता का विषय है।आज जब हम तिरंगे को सलाम करें, तो केवल देश की उपलब्धियों पर गर्व न करें, बल्कि उन कमियों को दूर करने का संकल्प भी लें जो भारत की प्रगति में बाधा हैं। शहीदों ने जिस भारत का सपना देखा था, वह केवल शक्तिशाली नहीं, बल्कि संवेदनशील, न्यायपूर्ण, शिक्षित और समतामूलक भारत भी था। सभी देशवासियों को इस पावन राष्ट्रीय पर्व पर संकल्प लेना चाहिए कि देश हमसे क्या ले सकता है, यह सोचने के बजाय हम देश को क्या दे सकते हैं। जब हर भारतीय के मन में यह भाव होगा तो भारत को सोने की चिड़िया बनने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक पाएगी, सभी को इस पर विचार करना चाहिए.

सेवा,समर्पण,पर्यावरण के त्रिवेणी संगम

शांतिलाल मुथा के जन्मदिन 15 अगस्त पर विशेष, युवाओं को मानते हैं ताकत

भारतीय जैन संगठन का नाम सामने आते ही जैन समाज के साथ हर व्यक्ति के मन में अपार सम्मान पैदा होता है. संगठन ने जहां आपदा प्रबंधन में महत्तम कार्य किया है, वहीं गरीब, आदिवासी, जरूरतमंद बच्चों का भाग्य संवारने के लिए स्वयं को झोंक दिया है. जल है तो कल है को ध्यान में रखते हुए बुलढाणा जिले में भूजलस्तर बढ़ाने के लिए किया गया कार्य आज भी लोग याद करते हैं. संगठन के संस्थापक शांतिलालजी मुथा का 15 अगस्त को जन्मदिन पर विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. बिना किसी सरकारी मदद की चाह में सेवाओं के इतने प्रकल्प संगठन द्वारा शांतिलाल मुथा की दूरदर्शिता के कारण चलती है कि उसका जवाब नहीं है.

समाजसेवा केवल जरूरतमंदों की सहायता तक सीमित नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प है. इसी भावना को अपने कार्यों के माध्यम से साकार करने वाले व्यक्तित्व हैं शांतिलाल मुथा. सेवा, समर्पण और राष्ट्रसेवा उनके व्यक्तित्व की तीन ऐसी धाराएं हैं, जो मिलकर समाजहित की मजबूत धारा बनाती है.संगठन को राष्ट्रीय स्तर पर सेवाभावी बनाते हुए हजारों बच्चों की जिंदगियों को संवारने का काम किया है.

बचपन में मां के देहांत के बाद हजारों बच्चों को माता-पिता तुल्य प्रेम देकर उनकी जिंदगियों को संवारने का कार्य शांतिलाल मुथा ने किया है. युवाओं को वे सबसे बड़ी ताकत मानते हैं. शिक्षा, संस्कार, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रहित के कार्यों को सदैव प्राथमिकता दी. उनका मानना है कि देश का विकास केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक के जिम्मेदार योगदान से संभव है. युवाओं में राष्ट्रभावना, अनुशासन और सामाजिक जिम्मेदारी विकसित करना उनके कार्यों की विशेष पहचान रही है.

उनकी कार्यशैली के बारे में बताते हुए समाजसेवी सुदर्शन गांग बताते हैं कि वे कभी थकते नहीं हैं और जो ठान लेते हैं, वह करने में कभी पीछे हटते नहीं है. आमतौर पर सरकारी मदद की चाह के बगैर काम शुरू करते हैं. उनका मानना है कि हमारा काम बोलना चाहिए. भारतीय जैन संगठन आज राष्ट्रीय स्तर का ऐसा संगठन है, जिसका कार्य जम्मू कश्मीर से कन्याकुमारी तक दिखाई देता है. लेकिन संगठन जिस काम को हाथ में लेता है, उसमें स्वयं को झोंक देता है. लाखों समर्पित स्वयंसेवक उन्होंने तैयार किया है. युवाओं को सबसे बड़ी ताकत मानते हैं. उनके काम में दिखावा नहीं, बल्कि निरंतर सेवा का भाव दिखाई देता है. समाज के विभिन्न वर्गों को साथ लेकर चलना, जरूरतमंदों की सहायता करना और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यबोध जगाना उनके जीवन का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है.शांतिलाल मुथा का व्यक्तित्व इस बात का प्रेरक उदाहरण है कि जब सेवा की भावना समर्पण से जुड़ती है और समर्पण राष्ट्रहित की दिशा में आगे बढ़ता है, तब समाज में वास्तविक परिवर्तन की शुरुआत होती है. सेवा, समर्पण और राष्ट्रसेवा का यह त्रिवेणी संगम निश्चित रूप से नई पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है. अमरावती से उनका गहरा लगाव है. मेलघाट के हजारों बच्चों का जीवन संवारने वाले शांतिलाल मुथाजी को जन्मदिन की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें, यही कामना.

विदर्भ स्वाभिमान, अमरावती.

विदर्भ स्वाभिमान

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbhäswabhiman@gmail.com.www.vidrabhswabhiman.com,rni. no MAHHIN/2010/ 43881

हम समाज में सद्भाव और भाईचारा बढ़ाएँगे

सभी भारतीय को 80 वें स्वतंत्रता दिवस की मनपूर्वक शुभकामनाएँ

15 अगस्त का यह दिन महोत्सव मनाने का दिवस तो है ही तथापि अपने इतिहास को याद करने का,अपने वर्तमान का मूल्यांकन करने का और अपने भविष्य का संकल्प लेने का दिवस भी है.

अनेक दशकों की गुलामी के बाद भारत ने 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की.यह स्वतंत्रता हमें किसी एक व्यक्ति, किसी एक वर्ग या किसी एक आंदोलन से नहीं मिली.

इसके पीछे असंख्य ज्ञात-अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग, बलिदान, संघर्ष और राष्ट्रप्रेम था.

किसी ने अपना परिवार छोड़ा,किसी ने अपना सुख छोड़ा, किसी ने अपना जीवन तक राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया.

हम आज स्वतंत्र भारत में साँस ले रहे हैं, क्योंकि किसी ने अपने आज का बलिदान देकर हमारा भविष्य सुरक्षित किया.

इसलिए स्वतंत्रता दिवस पर उन सभी ज्ञात-अज्ञात वीरों को हम स्मरण करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं.

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामने एक बहुत बड़ी चुनौती थी.हम इस स्वतंत्रता को किस प्रकार एक न्यायपूर्ण, लोकतांत्रिक और मजबूत राष्ट्र में बदलेंगे?

इसी महान कार्य में हमारे संविधान निर्माताओं ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई.भारत के संविधान ने प्रत्येक नागरिक को मौलिक अधिकार दिए समानता,स्वतंत्रता,न्याय और गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिया.

हमारे संविधान में नागरिकों के मौलिक कर्तव्यों का भी उल्लेख है. राष्ट्र के प्रति सम्मान, संविधान के प्रति निष्ठा, राष्ट्रीय एकता और अखंडता की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास तथा सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा ये केवल संविधान में लिखे शब्द नहीं हैं; ये एक जिम्मेदार नागरिक के जीवन-मूल्य हैं.

हम आज स्वतंत्रता का 80 वाँ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं.इन 79 वर्षों में भारत ने अनेक कठिनाइयों को पार किया है.

जब स्वतंत्रता मिली, तब हमारे सामने गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी,खाद्यान्न की कमी और अनेक सामाजिक चुनौतियाँ थीं.लेकिन भारत रुका नहीं.थका भी नहीं.हमने कृषि के क्षेत्र में प्रगति की.हमने उद्योग और विज्ञान में अपनी पहचान बनाई.

हमने अकादमिक,व्यावसायिक तांत्रिक शिक्षा का विस्तार किया.हमने अंतरिक्ष के क्षेत्र में विश्व का ध्यान आकर्षित किया.हमने सूचना और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध की.आज भारत डिजिटल तकनीक, स्टार्टअप, अंतरिक्ष विज्ञान, आधारभूत संरचना और अनेक अन्य क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ रहा है.

आर्थिक और तकनीकी प्रगति का अपना ही महत्व है तथापी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति तब होगी, जब अंतिम व्यक्ति भी सम्मान, सुरक्षा,अवसर और न्याय का अनुभव करेगा.

जब समाज में अमीर-ग़रीब, जाति-पांति, साम्प्रदायिक भेदभाव समाप्त होगा तब स्वतंत्रता पूर्णता प्राप्त करेगी.

जब तक भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध हमारी चेतना जागृत नहीं होती, अपने अधिकारों की बात करते हुए अपने कर्तव्यों को भूल जाते हैं, तब तक स्वतंत्रता अपूर्ण है.

वास्तविक स्वतंत्रता वह है, जिसमें व्यक्ति स्वतंत्र हो और उसकी स्वतंत्रता दूसरों की गरिमा और अधिकारों का सम्मान करे.हममें से अनेक लोगों ने स्वतंत्रता दिवस के अनेक रूप देखे हैं.

कभी विद्यालय के छोटे से मैदान में तिरंगा फहराया जाता था.बच्चे सफेद पोशाक पहनकर प्रभात फेरी में निकलते थे.देशभक्ति के गीत गूँजते थे.मिठाई बाँटी जाती थी.और स्वतंत्रता की 25 वर्षगाँठ में रात्रि 12 बजे झंडा फहराया गया.हम बड़े गर्व से कहते थे- भारत माता की जय!

समय बदल गया. साधन बदल गए. उत्सव मनाने के तरीके बदल गए.लेकिन एक चीज नहीं बदली,वह है देश के प्रति हमारी निष्ठा और स्नेह.

आज मोबाइल,इंटरनेट एआई और डिजिटल युग में देशभक्ति केवल नारे लगाने तक सीमित नहीं रह सकती, सड़क पर कचरा न फैलाना,

ईमानदारी से कर देना,मतदान का विवेकपूर्ण उपयोग करना,महिलाओं का सम्मान करना,छात्र एव छात्राओं को नैतिक शिक्षा देना, वृक्षारोपण कर उनका संवर्धन करना, पर्यावरण बचाना,अपने कर्तव्य को ईमानदारी से निभाना भी सच्ची देशभक्ति है.आज जब हम 80वें स्वतंत्रता दिवस की ओर बढ़ रहे हैं, तो हमें यह भी सोचना चाहिए, अगले 50 वर्षों का भारत हम कैसा बनाना चाहते हैं.

हमें ऐसा भारत चाहिए, जहाँ विकास के साथ नैतिक मल्य और ससंस्कार हों और जहाँ आधुनिकता के साथ हमारी संस्कृति और मानवीय मूल्य भी सुरक्षित रहें.

जहाँ विज्ञान के साथ विवेक हो,जहाँ अधिकारों के साथ कर्तव्य हों,जहाँ समृद्धि के साथ संवेदना हो,जहाँ विविधता के साथ एकता हो,हमारी आने वाली पीढ़ी को आर्थिक संपन्न भारत के साथ ससंस्कृत, न्यायपूर्ण, संवेदनशील और मजबूत भारत देना हम सबकी जिम्मेदारी है और कर्तव्य भी है. आइए,हम दिलसे तिरंगे को नमन करें. साथ ही संकल्प करें कि हमारी जिम्मेदारी के साथ ही हम राष्ट्र के स्वाभिमान और गौरव बढ़ाने के लिए अपनी ओर से हरसंभव सहयोग करेंगे और दूसरे नागरिकों को भी प्रेरित करेंगे.

हम संविधान का सम्मान करेंगे.हम अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों को भी निभाएँगे.हम जाति, भाषा, क्षेत्र और अन्य भेदों से ऊपर उठकर भारतीय होने पर गर्व करेंगे.हम समाज में सद्भाव और भाईचारा बढ़ाएँगे.

हम अपने बच्चों कों सफल जीवन,ससंस्कार भी देंगे और जहाँ भी संभव होगा,वहाँ राष्ट्रहित को व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर रखेंगे.

'भारत मेरा अभिमान है कर्तव्य मेरी पहचान है,'
जय हिंद! वंदे मातरम!
भारत माता की जय!

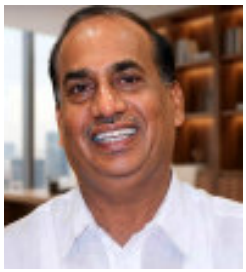

सदर्शन जैन,बीजेएस.
9422156523

देश की आजादी की सालगिरह पर समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

शुभेच्छुक
हेमंतकुमार पटेरिया,सौ. अनुराधा पटेरिया, डॉ.अनुकूल पटेरिया,डॉ. पटेरिया तथा समस्त पटेरिया परिवार, न्यू गणेश कॉलोनी,अमरावती.

कुल देवता की पूजा करने की प्रक्रिया

विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की भक्तिमय सेवा विश्वास वाले भक्तों को हर पल होता है तिरूपति में अनुभव

कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी संभव हो जाता है. कलयुग के देवता भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी के करोड़ों भक्त विश्वभर में फैले हैं. पिछले 25 साल से उनकी भक्ति से क्या-क्या अनुभव किया है, इसको ध्यान में रखते हुए अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार तिरूपति निवासा भगवान व्यंकटेश्वर की कथा यहां प्रस्तुत कर रहे हैं. हर गुरूवार को विदर्भ स्वाभिमान तथा आनंद परिवार की यह भक्तिमय सेवा प्रभु चरणों में अर्पित है. निर्मल मन से प्रभु गोविंदा की भक्ति करने पर इसका अनुभव आप भी कर सकते हैं.तिरूमल तिरूपति देवस्थानम तिरूपति द्वारा प्रकाशित मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा की श्री वेंकटाचल की महिला से साभार लिया जा रहा है.जय गोविंदा,जय गोविंदा, जय गोविंदा.डिजिटल संस्करण

www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

ग़तांक से जारी-यजुशाखानुसार, वैखानस सूत्रोक्तों के अनुसार पुण्याहवचन आदि शुभ कार्य पूर्ण कर दिए गए. सभा में उपस्थित सभी को तांबूलादि दिला कर तदुपरांत हरि की ओर देखकर 'कुल देवता कौन है.' ऐसा पूछा गया. चक्री ने जवाब दिया. 'पांडवों और हमारे लिए शमी वृक्ष ही कुल देवता है.' चक्री के इस जवाब को सुनकर वशिष्ट ने पूछा 'शमी वृक्ष कहाँ पर है?' तो कुंभ संभव ने बताया. 'कुमार धारा तीर्थ के समीप है' तब हरि मंगल वाद्यों सहित ब्रह्मणों को साथ लेकर कुमार धारा तीर्थ पर पहुँच गए. वहाँ पर हरि ने शमी वृक्ष की परिक्रमा करके नमस्कार करके पूजा की. ऐसी प्रार्थना की कि 'निर्विघ्न ढंग से विवाह संपन्न हो जाय.' उस वृक्ष की शाखा की सर पर लाद कर लाकर 'इस कुलदेवता को कहाँ रखना है?' पूछा. तब नारद ने बताया कि वृक्ष की शाखा को वराह स्वामी की सन्निधि के पास रखा जा सकता है. तब हरि वराह स्वामी से अनुमति लेकर वृक्ष की शाखा कुल देवता को मोतियाँ और चावल बिछाकर उस पर रखा. बाद में नये वस्त्र उसे समर्पित करके पूजा की.

वहाँ पर अखंड दीप को रखवाया. तब वराह स्वामी को देखकर हरि ने कहा. 'हे श्री वराह स्वामी! तुम्हें और भूदेवी को मेरा विवाहोत्सव देखने आना चाहिए.' तैयार होकर आने की विनति की. तब वराह स्वामी ने कहा. 'अब पूरा प्रदेश फलों से भरा है. अब मेरा आना संभव नहीं है. मेरी जगह वकुला मालिका विवाह में आयेगी.' अब हमें निकलने की आज्ञा दीजिए. कहते हरि ने ब्रह्म की ओर देखकर यात्रा की भेरी बजाने की आज्ञा दी. तब ब्रह्म ने कहा. 'आज काफी समय निकल गया है. आज यहीं पर भोज करके कल यहाँ से निकल जाएंगे.' इस रूप में कहनेवाले ब्रह्म को देखकर हरि ने कहा.

'देश काल की जानकारी के बिना तुम यह यत्न करना चाहते हो. चाहने पर भी इस पहाड़ पर पदार्थ कहाँ प्राप्त होंगे?' चक्री की इन बातों को सुनकर शिव ने कहा. 'जो यत्न किया गया उसे पूरी तरह निभाना चाहिए. हे हरि ! बिना भोज के यहाँ से निकलना ठीक नहीं है.' इस रूप में शिव के कहने पर हरि ने सिरि की ओर देखा. 'इस रूप में सिरि से वरदान मांगना मैं उचित नहीं समझता हूँ. यह एक प्रकार की याचना ही होगी.' ब्रह्म और रुद्र को देखकर हरि ने कहा. वल्मीक के समीप में पार्वती आदि प्रमुख सहागिनों के साथ बैठी लक्ष्मी से मांगे बिना पुष्करिणी तीर्थ के पास अश्वत्थ वृक्ष की छाया में बैठ कर कुबेर को हरि ने अपने पास बुलाया. एकांत में कुबेर से हरि ने इस रूप में कहा.

श्री वेंकटेश्वर के द्वारा कुबेर को ऋण पत्र लिखकर देना-'हे कुबेर ! मैंने विवाह करने का यत्न किया. किंतु मेरे पास अब धन नहीं है. विवाह के लिए लक्ष्मी से धन मांगने में मुझे संकोच हो रहा है. कुबेर से उधारी पर धन लेने का तय किया गया है.

इसलिए तुम मुझे शीघ्र ही धन दे दो. मैं उधार पत्र लिख कर दूँगा. वर्ष में एक बार ब्याज चुकाता रहूँगा. कलियुग के अंत तक सच-सच मूल धन को चुका दूँगा. मेरी बात झूठ समझ कर धन देने से इनकार मत करना. ब्रह्म और शिव को मैं साक्षी के रूप में रखकर उधार पत्र लिखाऊँगा.' हरि के इस रूप में कहने पर कुबेर ने कहा. 'हे पद्माक्ष ! आपकी कृपा से जितना चाहे उतना धन मैं दे सकता हूँ. आप ब्याज क्यों देंगे? आपका विवाह होना हम सबके लिए संतोष की बात है.

इससे बढ़कर क्या लाभ हो सकता है. तब हरि ने हँस कर इस रूप में कहा. 'दान लेने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ. इसलिए हे निर्मलात्मा ! उधार पत्र लिखकर दूंगा. धन शीघ्र ही दे दो.' इस रूप में कुबेर को मनाते हरि ने ब्रह्म और रुद्र की ओर देखकर कहा. 'हे ब्रह्म और रुद्र ! इस कलियुग के अंत तक इस धन्य शेषाद्रि पर परिपूर्ण विलास के साथ अद्भुत ढंग से सारे सुजनों को दर्शन देते हुए, उन्हें वरदान देते हुए उनसे धन वसूल करके कुबेर के उधार को चुकाऊँगा. आप दोनों ही इसके लिए साक्षी हैं. तभी पत्र को मंगाकर अनेक पंक्तियों में उधार पत्र लिखा कर हरि ने ब्रह्म के हाथों में पढ़ने के लिए उसे दे दिया. भगवान व्यंकटेश बालाजी की कृपा होने पर जीवन में बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है.

देश की आजादी की सालगिरह पर समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

शुभेच्छुक
सुदर्शन गांग, अरूण कडू, प्रदीप जैन
तथा समस्त आनंद परिवार, बडनेरा,
अमरावती.

श्रद्धा और विश्वास में असंभव को संभव करने की ताकत

मनीष झांबानी का साक्षात्कार

भक्ति की शक्ति अपार होती है. भगवान महाकाल सबसे भोले हैं और छोटी सी भक्ति करने पर प्रसन्न होकर भक्तों को आशिर्वाद देते हैं. जहां श्रद्धा और विश्वास है, वहीं महाकाल हैं और वे भक्तों की किस रूप में रक्षा करते हैं, इसका अनुभव उनका भक्त ही कर सकता है. इस आशय का मत महाकाल भक्त मनीष झांबानी ने किया. इस बारे में उनका साक्षात्कार प्रस्तुत है.

प्रश्नः आपके अनुसार महाकाल का वास्तविक स्वरूप क्या है?

उत्तरः महाकाल केवल किसी मंदिर या स्थान तक सीमित नहीं हैं. जहां सच्ची श्रद्धा, अटूट विश्वास और पवित्र भावना होती है, वहीं महाकाल की अनुभूति होती है. भक्त के मन में विश्वास जागता है तो उसके भीतर सकारात्मक ऊर्जा और आत्मबल का संचार होता है.

प्रश्नः श्रद्धा और विश्वास का जीवन में क्या महत्व है?

उत्तरः श्रद्धा हमें सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है और विश्वास कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस देता है. जब दोनों साथ होते हैं तो व्यक्ति चुनौतियों से घबराता नहीं, बल्कि धैर्य के साथ उनका सामना करता है.

प्रश्नः महाकाल की भक्ति से क्या संदेश मिलता है?

उत्तरः महाकाल की भक्ति हमें सत्य, संयम, सेवा और सदाचार का मार्ग अपनाने की प्रेरणा देती है. सच्ची भक्ति केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि जरूरतमंदों की सहायता और मानवता की सेवा में भी दिखाई देती है.

प्रश्नः आज की युवा पीढ़ी को महाकाल की भक्ति से क्या सीखना चाहिए?

उत्तरः युवाओं को आस्था के साथ कर्म पर भी विश्वास रखना चाहिए. मेहनत, अनुशासन, संस्कार और सकारात्मक सोच को जीवन का आधार बनाना चाहिए. ईश्वर पर विश्वास हमें कर्म से दूर नहीं करता, बल्कि अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देता है.

प्रश्नः आपका भक्तों को संदेश क्या है?

उत्तरः मेरा यही संदेश है कि मन में श्रद्धा हो, हृदय में विश्वास हो और कर्म में ईमानदारी हो तो जीवन की राह आसान हो जाती है. जहां सच्ची श्रद्धा और अटूट विश्वास है, वहीं महाकाल हैं और वहीं से जीवन को नई शक्ति मिलती है.

शुभेच्छुक- प्राचार्य संजय शिरभाते परिवार, महालक्ष्मी नगर,अमरावती.

समर्पित रहें

आदर्श राष्ट्रधर्म हमें सिखाता है कि देश की एकता, अखंडता, शांति और प्रगति को सर्वोच्च प्राथमिकता दें. नागरिक अपने अधिकारों के साथ कर्तव्यों का भी पालन करें, कानून का सम्मान करें, सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करें और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशील रहें.

विदर्भ स्वाभिमान

संवाददाता चाहिए

महाराष्ट्र के साथ ही उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में राष्ट्र धर्म और मानव धर्म को समर्पित होकर पत्रकारिता में सकारात्मकता को बढ़ाने का प्रयास करने वाले विदर्भ स्वाभिमान को मध्य प्रदेश के विभिन्न बड़े महानगरों में संवाददाताओं की नियुक्ती करनी है. सामाजिक, धार्मिक कार्य में उत्साह रखने वाले युवक संपर्क करें. अमरावती ही नहीं तो समूचे संभाग में आचार-विचार-आदर्श संस्कारों को बढ़ावा देने वाले हिंदी साप्ताहिक के रूप में पाठकों का प्यार पाने वाले विदर्भ स्वाभिमान को जिले की अचलपुर, चिखलदरा, चांदुर बाजार,वरूड़ में संवाददाताओं की नियुक्ति करनी है. सामाजिक दायित्व को महत्व देने वाले इच्छुक युवक-युवतियां संपर्क कर सकते हैं. आवेदन के साथ पासपोर्ट फोटो जरूरी है. इच्छुक अपना आवेदन हमें इस पते पर भेज सकते हैं. प्राप्त आवेदनों की जांच करने के बाद फैसला लिया जाएगा. सामाजिक सरोकार रखने वाले ही संपर्क करें.

हमारा पता

विदर्भ स्वाभिमान अखबार

छाया कॉलोनी, अकोली रोड, गजानन महाराज मंदिर के पीछे, अमरावती.

मोबाइल 9423426199/8208407139

www.vidarbhswabhiman.com

विदर्भ स्वाभिमान

सप्ताह के सात वार के अलावा सबसे बड़ा वार परिवार रहता है. जब सभी एक-दूसरे की भावना समझते हैं, एक-दूसरे का सम्मान करते हैं तो वह सुखी परिवार और इसके उल्टा सभी जब एक-दूसरे से जलने की भावना रखते हैं तो वह दुःखी परिवार होता है. आप सुखी परिवार बनें.

जरूरी नम्बर टोल फ्री

विद्युत सेवा	*1912*
पुलिस सेवा	*112*
अग्नि सेवा	*101*
एम्बुलेंस सेवा	*102*
यातायात पुलिस	*103*
आपदा प्रबंधन	*108*
चाइल्ड लाइन	*1098*
रेलवे पूछताछ	*139*
भ्रष्टाचार विरोधी	*1031*
रेल दुर्घटना	*1072*
सड़क दुर्घटना	*1073*
सीएम सहायता लाइन	*1076*
क्राइम सहायता	*1090*
महिला सहायता लाइन	*1091*
पृथ्वी भूकम्प	*1092*
बाल शोषण सहायता	*1098*
किसान काल सेन्टर	*1551*
नागरिक काल सेन्टर	*155300*
ब्लड बैंक	*9480044444*

देश की आजादी की सालगिरह पर समस्त देशवासियों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

शुभेच्छुक
बालकिसन पाण्डेय तथा समस्त पाण्डेय परिवार,संचालक-दुग्धपूर्णा ग्रुप,अमरावती.

आजादी आसानी से नहीं मिलने के बाद भी चुनौतियां कम नहीं

14 अगस्त 1947 की सुबह कराची में जश्न की तैयारी थी. पाकिस्तान बनने वाला था. दिल्ली में आजादी की रात का इंतजार था. लेकिन पंजाब के कई घरों में खुशी नहीं, डर था. लोगों को पता ही नहीं था कि कल उनका गांव किस देश में होगा. एक और बात उन्हें परेशान कर रही थी. पंजाब और बंगाल की सीमा तय करने का काम सर सिरिल जॉन रेडक्लिफ को दिया गया था. लेकिन उनकी बनाई सीमा 14 अगस्त को लोगों के सामने नहीं आई. फैसला 17 अगस्त को बताया गया. यानी दो मुल्क आजाद हो गए, लेकिन हजारों परिवारों को यह तक नहीं पता था कि उनका घर किस मुल्क में है.

यहीं से कहानी शुरू होती है. पहले कराची चलते हैं, जहां पाकिस्तान के जन्म का जश्न था. फिर पंजाब जाएंगे, जहां लोग घर छोड़ने को मजबूर हो रहे थे. उसके बाद कलकत्ता पहुंचेंगे, जहां गांधी आजादी के जश्न से दूर शांति बचाने में लगे थे. फिर दिल्ली आएंगे, जहां आधी रात को भारत आजाद होने वाला था. और आखिर में देखेंगे कि सीमा सामने आने के बाद क्या हुआ, जब लाखों लोग अपना घर छोड़कर दूसरी तरफ जाने लगे. एक तारीख थी. दो नए देश थे. लेकिन उस रात हर किसी की कहानी एक जैसी नहीं थी.13 अगस्त की शाम कराची में लॉर्ड माउंटबेटन के सम्मान में भोज हुआ था. अगले दिन उन्हें पाकिस्तान की संविधान सभा में सत्ता हस्तांतरण की प्रक्रिया पूरी करनी थी. लेकिन माउंटबेटन के लिए यह सिर्फ पाकिस्तान तक की यात्रा नहीं थी. उन्हें कुछ घंटों बाद दिल्ली भी पहुंचना था, जहां उसी रात भारत आजाद होने वाला था.

14 अगस्त की सुबह करीब 9 बजे कराची की मौजूदा सिंध असेंबली बिल्डिंग के बाहर भीड़ जमा थी. अंदर पाकिस्तान की संविधान सभा का विशेष सत्र शुरू हो चुका था. तभी मोहम्मद अली जिन्ना और माउंटबेटन एक खास बग्गी में सवार होकर वहां पहुंचे. बग्गी आगे बढ़ी तो भीड़ ने नारे और तालियों से उनका स्वागत किया.अंदर का माहौल भी कम खास नहीं था.

सभा की सभी सीटें भर चुकी थीं. कुछ ही देर में सत्ता हस्तांतरण की औपचारिक कार्यवाही पूरी हुई और पाकिस्तान के नए देश के रूप में सामने आने की प्रक्रिया पूरी हुई. बाहर भीड़ इस पल का गवाह बन रही थी और अंदर इतिहास लिखा जा रहा था, लेकिन माउंटबेटन के पास रुकने का वक्त नहीं था.

कार्यवाही खत्म हुई तो वह और जिन्ना उसी बग्गी से गवर्नर जनरल हाउस लौटे. दोपहर करीब 2 बजे माउंटबेटन नई दिल्ली के लिए रवाना हो गए. कराची में एक नए देश के जन्म की रस्म पूरी हो चुकी थी. अब उन्हें उसी दिन रात दिल्ली में दूसरे देश की आजादी का हिस्सा बनना था. और यहीं से कहानी एक अजीब मोड़ लेती है. एक तरफ कराची में पाकिस्तान के जन्म का जश्न था. दूसरी तरफ भारत में आजादी की रात करीब आ रही थी. लेकिन इन दोनों के बीच जो लकीर खिंची थी, वह अभी आम लोगों के सामने नहीं आई थी.14 अगस्त तक पंजाब का माहौल बहुत खराब हो चुका था. बंटवारे की खबर अब सिर्फ अखबार या नेताओं के भाषण की चीज नहीं रह गई थी. वह लोगों के दरवाजे तक पहुंच चुकी थी. हिंदू, मुस्लिम और सिख परिवारों के सामने सवाल था कि वे अपने घरों में रहेंगे या कहीं और चले जाएंगे. बंटवारे के बाद करीब 1.5 करोड़ लोगों ने नई सीमा के एक तरफ से दूसरी तरफ जाने की कोशिश की.आजादी के बाद भी दर्द गहरे हैं.

विदर्भ स्वाभिमान
सदस्य बनें
विदर्भ स्वाभिमान संस्कारों का प्रोत्साहित करने वाला अखबार है. बच्चों के लिए यह ज्ञान का भंडार है. इसकी सदस्यता का अभियान चल रहा है. ऐसे में सदस्य बनने के इच्छुक संपर्क करें. मार्केटिंग करने तथा पेपर बांटने के लिए लड़के चाहिए.
संपर्क
छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती.
मो.9423426199

गुरूवार 6 से 12 अगस्त 2026

इस सप्ताह आप किसी शादी पार्टी में सम्मिलित होने बाहर जा सकते है, वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. वाद-विवाद की स्थिति से खुद को दूर रखें. अपने परिचित व्यक्ति से आज आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है, पार्टनर का साथ मिलेगा.

वृषभ- इस सप्ताह आप नया वाहन आदि खरीद सकते है, परिवार में नया मेहमान आ सकता है. आपको कोई नए कार्य का बड़ा ऑफर आज मिल सकता है, किसी पुराने मित्र से मिलना होगा. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिवार में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे.

मिथुन- आज का दिन आपका शानदार रहेगा, मन स्थिर और प्रसन्न रहेगा. वाणी के प्रभाव से आज आपके रुके हुए काम पूरे होंगे. किसी विशेष व्यक्ति से मिलना होगा. आज कोई नया व्यापार आप शुरू कर सकते है, पार्टनर के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क- आज का दिन आपका सोच विचार कर काम करने का है. आप कोई बड़ा डिसीजन व्यापार-व्यवसाय में न लें, नई साझेदारी में सावधानी बरतें. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, पार्टनर के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी. आप आज वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें.

सिंह-आज आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें. व्यापार-व्यवसाय में अपने सहयोगी पार्टनर्स से सावधान रहें, नहीं तो आपका काम बिगड़ सकता है. कोई नया लेन-देन आज न करें, वाहन चलाते समय सावधानी बरतें.

कन्या-आज आपका मन अशांत रहेगा, व्यापार-व्यवसाय में नुकसान उठाना पड़ सकता है. कोई बड़ा काम आपके हाथ से निकल सकता है. आज आप पारिवारिक मतभेद में उलझ सकते हैं. आप कोई बड़ा जोखिम आज व्यापार मे न उठाएं. पार्टनर के स्वास्थ्य के कारण चिंतित रह सकते हैं.

तुला-आज का दिन आपका बहुत अच्छा रहने वाला है, आज आप कोई नया बिजनेस शुरू कर सकते हैं. आपनों का साथ मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम होंगे. कोई नया वाहन मकान खरीद सकते हैं,किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं.

वृश्चिक-आज आप किसी अपने के स्वास्थ्य को लेकर परेशान रहेंगे, माता-पिता का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है. व्यापार-व्यवसाय में अपने पार्टनर का आज आपको सहयोग मिलेगा. कोई बड़ा काम आज आप शुरू कर सकते हैं काम में रूकावट जरूर आएगी. वाणी पर संयम रखें.

धनु-आज के दिन आप वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. किसी काम का बहुत दिनों से सोच रहे हैं आज वह काम पूरा होगा. न्यायालय पक्ष के काम में आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है. वाणी पर संयम रखें, वाद विवाद की स्थिति में अपना बचाव करें.

मकर- सप्ताह में आपको कोई सुखद समाचार मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम का योग बनेगा. आप कोई नया निवेश व्यापार-व्यवसाय में कर सकते हैं. पार्टनर का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा.

कुंभ-आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है. आप कोई नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या व्यापार में कोई बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं. कार्यक्षेत्र में पार्टनर का अच्छा सहयोग मिलने से कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- इस सप्ताह स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा. आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है. आप परिवार के किसी सदस्य के कारण परेशानी में पड़ सकते हैं. संतान की चिंता बनी रहेगी, व्यापार-व्यवसाय में सहयोगी से मतभेद बढ़ सकते है, आज आप किसी नए काम के लिए विचार कर सकते हैं. पारिवारिक विवाद से दूर रहें.

आपका सप्ताह शुभ हो, विदर्भ स्वाभिमान यही कामना करता है.

जिम्मेदारी भी है जरूरी

पेज 1 से जारी-खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उद्योग, परिवहन, बैंकिंग, संचार और बुनियादी ढांचे का भी व्यापक विकास हुआ. आज भारत विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपनी मजबूत पहचान बना रहा है.आजादी ने सामाजिक परिवर्तन का मार्ग भी प्रशस्त किया. महिलाओं, वंचित वर्गों और कमजोर समुदायों के अधिकारों के लिए अनेक संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्थाएं विकसित हुईं. देश में समान अवसर और सामाजिक न्याय की भावना मजबूत हुई है.हालांकि आजादी की उपलब्धियां तभी सार्थक होंगी, जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों को समझे. गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा, भ्रष्टाचार और सामाजिक असमानता जैसी चुनौतियों से मिलकर लड़ना आवश्यक है.आजादी हमें केवल अधिकार नहीं देती, बल्कि राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी भी सौंपती है. स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम एक शिक्षित, आत्मनिर्भर, स्वच्छ, समतामूलक और विकसित भारत के निर्माण में अपना योगदान दें. देश की उपलब्धियां के साथ हमें विभिन्न समस्याओं और कमियों पर भी चिंतन करने के साथ यह संकल्प भी करना होगा कि एकता की डोर में बंद कर हम हमारे महान राष्ट्र के लिए स्वयं का क्या योगदान दे सकते हैं.

सावन माह के दूसरे सोमवार को अंबा नगरी हुई शिवमय

अमरावती-सावन महीने के दूसरे सोमवार को अंबानगरी शिवमय हो गयी . इस दौरान जहां शिव मंदिरों में विभिन्न कार्यक्रम हुए वहीं दूसरी ओर कांवड़ यात्रा का भी सिलसिला चल रहा है. श्री सतीधाम मंदिर , अमरावती में 10 अगस्त को तृतीय वर्ष व्दादश पार्थिव ज्योतिर्लिंग रुद्रभिषेक हुआ वहीं कंवर नगर स्थित शिव मंदिर में तड़के सोमवार को तड़के 5 बजे भस्म आरती में भी बड़ी संख्या में भक्तों ने भाग लिया . इसके अलावा शहर के विभिन्न शिव मंदिरों में कई धार्मिक कार्यक्रम लिया गया . ओम नमः शिवाय के नारे से पूर क्षेत्र गूंज उठा . नर्मदेश्वर महादेव मंदिर वल्लभ नगर में नंदकिशोर पेटकर व्दारा शिव पुराण का पाठ किकया जा रहा है. विधि-विधान से भगवान शिव के व्दादश ज्योतिर्लि गों का रुद्राभिषेक एवं पूजन किया . इटारसी से विशेष रूप से आमंत्रित पंडित श्री अतुल मिश्रा के मार्गदर्शन में उनकी टीम ने दो दिनों में मिट्टी से अपने हाथों से 12 पार्थिव ज्योतिर्लिंग तैयार किए . इसके बाद वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधि - विधानपूर्वक रूद्रभिषेक एवं पूजा संपन्न कराई गई. इस धार्मिक अनुष्ठान में हिमांशु दवे देवेश अनुज दुबे , अनिकेत दुबे एवं मोहित शर्मा ने भी सहभागिता की. आयोजन को सफल बनाने में सीमा चौबे गायत्री बगड़िया जय जोशी सहित सतीधाम मंदिर परिवार ने विशेष सहयोग एवं परिश्रम किया.

साफ-सफाई की समस्या को लेकर बढ़ी नाराजी

विदर्भ स्वाभिमान,5 अगस्त

अमरावती- शहर में साफ-सफाई की समस्या का समाधान नहीं हो रहा है. कोणार्क को करोड़ों का ठेका देने के बाद भी साफ-सफाई की हालत में सुधार नहीं हो रहा है. लोगों का स्पष्ट आरोप है कि पैसे की लालच में जनप्रतिनिधि तथा प्रशासन द्वारा दोनों की मिलीभगत का खामियाजा टैक्स भरने वाले शहरवासियों को भुगतना पड़ रहा है. इस मामले में सैकड़ों शिकायतों के बाद भी केवल बनवा-बनवी वाली स्थिति है. क्षेत्रवासियों ने मनपा आयुक्त सहित जनप्रतिनिधियों से सफाई की स्थिति सुधारने के लिए कदमउठाने का आग्रह किया है. उनके मुताबिक दिक्कत बढ़ रही है.

विदर्भ स्वाभिमान
RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881
संपादक : सुभाषचंद्र दुबे
प्रबंधक : सौ. विणा एम. दुबे

जाहीर सुचना	10x2	500
जाहीर सुचना	15x2	1000
बच्चों का जन्मदिन	10x2	500
शादी की वर्षगांठ	10x2	500
नाम में बदल	10x2	500
गुमशुदा	10x2	400
श्रध्दांजलि	10x2	500
पुण्यस्मरण	15x2	1000

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी, अमरावती
मो. 9423426199/ 8855019189

सन् 1967 पासून
अमरावती शहरात
वाजवी दरात
सर्वात जास्त
प्लाटस्चे सौदे
करणारे एकमेव
इस्टेट एजंट
संजय
एजंसीज्
टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.फोन
2564125,2674048

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा
शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.
--संपर्क--
प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

वननेस मुक्तांगण, बच्चों के जीवन को सुधारने का बन गया है माध्यम

आदर्श पहल- स्वाभिमान नगर झोपड़पट्टी में पेड़ के नीचे बच्चों को हैं पढ़ाते, सालभर मार्गदर्शन के साथ शालेय साहित्य का किया जाता है वितरण

विदर्भ स्वाभिमान, 12 अगस्त

अमरावती-कुछ युवाओं की टीम द्वारा पिछले कई वर्षों से वननेस मुक्तांगन के माध्यम से जिस तरह से गरीब बच्चों को शिक्षा के माध्यम से आगे बढ़ने का प्रयास किया जा रहा है, इसकी जितनी सराहना की जाए कम है. संस्था का हर सदस्य सरकारी नौकरी अथवा निजी नौकरी एवं अपना स्वयं का व्यवसाय करता है. इसके बाद भी स्वाभिमान नगर झोपड़पट्टी में हर रविवार को यह गरीब बच्चों को पढ़ाने का जो मानवीय कार्य कर रहे हैं, गरीब बच्चों को दफ्तर और शालेय साहित्य के माध्यम से हर संभव मदद का प्रयास करते हैं. इसकी सराहना शहर वासी भी करते हैं. पढेगा तो ही आगे बढ़ेगा भारत के संकल्प को साकार करने का कार्य यह संस्था कर रही है. इस कार्य में समाज के भी कई मान्यवरों का साथ भी मिल रहा है, इससे युवाओं की ताकत और हिम्मत भी बढ़ रही है.

पढ़ेगा तो बढ़ेगा भारत पर जोर-संस्था का मानना है कि शिक्षा के माध्यम से देश विकास में योगदान दिया जा सकता है. यही कारण है कि महंगाई के दौर में गरीब बच्चों को पढ़ाने के साथ ही उनकी मदद पर जोर देता है. शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व और भविष्य को गढ़ने का सशक्त माध्यम है. इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए वननेस मुक्तांगन बच्चों में पढ़ाई के प्रति रुचि, जिज्ञासा और आत्मविश्वास जगाने का सराहनीय प्रयास कर रहा है. इसमें विगत कुछ वर्षों के दौरान सैकड़ों बच्चों को समुचित मार्गदर्शन के साथ ही स्पर्धा परीक्षा की तैयारी जैसे विषय पर मार्गदर्शन किया है. इसकी सराहना शहर में भी की जाती है और लोगों द्वारा भी संस्था को समुचित सहयोग देकर विश्वास जताया जाता है. जो किसी भी संस्था के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण होता है.

संस्था के अमित बनारसे, शुभम बलखंडे, प्रकाश पाण्डेय, वैष्णवी मोहोकार के साथ ही गरीब बच्चों की सेवा में समर्पित कई साथी इसके लिए लगातार प्रयासरत रहते हैं. रविवार को पेड़ के नीचे सजने वाली उनकी क्लास निश्चित ही प्रकृति के महत्व के साथ ही बच्चों के उत्साह को बताने के लिए काफी है. पढ़ेगा तो बढ़ेगा भारत की भावना को साकार करते हुए वननेस मुक्तांगन का उद्देश्य बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार, रचनात्मकता और सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ना है. यहां बच्चों को सीखने के लिए अनुकूल वातावरण देने के साथ उनकी प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने पर भी जोर दिया जाता है. संस्था द्वारा शिक्षा के साथ ही बच्चों को आदर्श नागरिक बनाने के लिए बेहतरीन संस्कार देने की कक्षाएं होती हैं. आज के दौर में शिक्षा ही वह आधार है, जिसके बल पर बच्चे अपने सपनों को साकार कर सकते हैं और देश के विकास में योगदान दे सकते हैं. ऐसे प्रयास समाज में शिक्षा के महत्व का संदेश देने के साथ अभिभावकों और युवाओं को भी प्रेरित करते हैं.

वननेस मुक्तांगन जैसे प्रयास यह विश्वास मजबूत करते हैं कि आज का शिक्षित और संस्कारित बच्चा ही कल के विकसित, सक्षम और आत्मनिर्भर भारत की नींव बनेगा. वननेस मुक्तांगन जैसी संस्थाओं को आज देश की जरूरत है. संस्था की सराहना की जानी चाहिए.